स्नातक स्तर की विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन

*डॉ० अरूणा मिश्रा **

मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है। मूल्य के आधार पर ही मनुष्य अपना जीवन दृष्टिकोण बनाता है, मूल्य ही मानव जीवन को अर्थ, उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते हैं और ये ही उसके जीवन के आदर्श बन जाते हैं। मानव मूल्य विविध सामाजिक मूल्यों से मिलकर बनते हैं। इन मूल्यों की प्रकृति सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्य बोधात्मक, सामाजिक, व्यक्तिगत, राजनैतिक एवं धार्मिक हो सकती है।

विभिन्न शोधों के परिणामों से भी यह ज्ञात होता है कि मूल्य मनुष्य के व्यक्तित्व एवं विकास के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करते हैं।

त्रिपाठी (1966) ने दयालबाग तथा आगरा शहर के छात्रों के सामाजिक, आर्थिक स्तर, बुद्धि, व्यक्तिगत–समस्या, अभिवृत्ति और विशेष मूल्यों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष प्राप्त किया कि शहरी तथा ग्रामीण छात्रों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। गौड़ (1975) ने कक्षा दस में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम सम्बन्धी मूल्यों और दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लड़के एवं लड़कियों के सैद्धान्तिक मूल्यों में अन्तर नहीं है। वर्मा (1995) ने कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के मूल्य आधारित उत्तरदायित्व का अध्ययन किया। प्रदत्तों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि तीनों संकायों के विद्यार्थियों में से कला संकाय के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य अपेक्षाकृत उच्च तथा विज्ञान तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक मूल्य उच्च है तथा सौंदर्यबोधात्मक मूल्य तीनों ही संकाय के विद्यार्थियों में निम्न होता है। श्रीवास्तव (2004) ने महिला महाविद्यालय और सहशिक्षा वाले महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय, समायोजन एवं मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि महिला महाविद्यालय में अध्ययन करने वाली छात्राओं में, सहशिक्षा में पढने वाली छात्राओं की अपेक्षा धार्मिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक, राजनीतिक एवं धार्मिक मूल्यों का स्तर उच्च होता है। सह शिक्षा वाले महाविद्यालय एवं महिला महाविद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं के आर्थिक एवं सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है। वर्मा (2005) ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों का अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के प्रजातांत्रिक मूल्य समान हैं। कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी न्याय मूल्य को समान महत्व देते हैं। पंथनिरपेक्षता मूल्य को दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों ने लगभग समान महत्व दिया तथा बन्धुत्व मूल्य को दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों ने सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है। यह भी ज्ञात हुआ कि स्वतंत्रता मूल्य को कला की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी अधिक महत्व देते हैं। कुमार (2008) ने स्नातक स्तर की सामाजिक रूप से वंचित छात्राओं के

---

* प्रवक्ता, बी० एड० विभाग,एस०एस० खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद

मूल्यों का अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक रूप से वंचित उच्च आर्थिक वर्ग एवं निम्न आर्थिक वर्ग वाली छात्राओं के मूल्यों में अन्तर नहीं पाया जाता है। यदि उनके सामाजिक स्तर, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं आर्थिक स्तर को अनदेखा किया जाय तो उनके शैक्षिक स्तर एवं सामाजिक अवसर ने उनके मूल्यों को बढ़ाने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया जा सकता है। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मन में मूल्यों के प्रति निष्ठा ही उनके भविष्य की शासन व्यवस्था, मानव की जीवनशैली, मानव के चरित्र तथा भविष्य की शिक्षा की व्यवस्था का निर्धारण करने में सहायक सिद्ध हो सकते है। अतएव प्रस्तुत अध्ययन में विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के मूल्यों के प्रति उनकी वरीयताओं को ज्ञात करने का प्रयत्न किया गया है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. स्नातक स्तर की विज्ञान वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर की कला वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर की विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन विधि:

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श: इस शोध का समग्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महिला महाविद्यालय की विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राएँ हैं जिनमें से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 50 विज्ञान वर्ग की एवं 50 कला वर्ग की छात्राओं का चयन किया गया।

प्रयुक्त उपकरण:

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की सम्प्राप्ति हेतु डॉ० एच०जे० आलम एवं रामजी श्रीवास्तव ([illegible]) द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी अनुपात का प्रयोग किया गया। मूल्य मापनी का प्रशासन विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं पर किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या

आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों का विवरण तालिका संख्या 1–8 तक निम्नांकित रूप में प्रस्तुत है–

तालिका 1 कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सैद्धान्तिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात
बी०ए०	50	35.66	7.486	2.44*
बी०एस०सी०	50	37.10	6.049	

*0.05 स्तर पर सार्थक

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि "टी" का मान 2.44 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। सार्थकता की दिशा बी0एस0सी0 के छात्राओं की ओर इंगित करती है। इससे यह ज्ञात होता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के सैद्धान्तिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है। इस परिणाम से यह ज्ञात होता है कि बी0एस0सी0 की छात्राओं में बी0ए0 की छात्राओं की अपेक्षा सैद्धान्तिक मूल्य अधिक होता है।

सारणी–2कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात
बी0ए0	50	29.92	5.638	1.247
बी0एस0सी0	50	30.72	4.233	

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि "टी" का मान 1.247 है तथा .05 स्तर पर "टी" का मान 1.98 है जो कि गणना किये गए मान से अधिक है। अतः विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सारणी–3 कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सौन्दर्य बोधात्मक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात
बी0ए0	50	30.24	5.137	0.683
बी0एस0सी0	50	31.72	4.977	

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि "टी" का मान 0.05 स्तर पर निर्धारित मान से कम है। अतः विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के सौन्दर्य बोधात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सारणी–4 कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात
बी0ए0	50	30.88	6.346	0.865
बी0एस0सी0	50	32.44	4.792	

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि "टी" का मान 0.05 स्तर पर निर्धारित मान से कम है। अतः विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के सामाजिक मूल्यों में सार्थक

अन्तर नहीं है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सारणी–5 कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के राजनैतिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात
बी0ए0	50	27.08	4.365	1.306
बी0एस0सी0	50	26.34	5.269	

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि "टी" का मान 1.306 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के राजनैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सारणी–6 कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण

	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात
बी0ए0	50	34.5	5.407	0.957
बी0एस0सी0	50	33.14	5.700	

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि "टी" का मान 0.957 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः विज्ञान एवं कला वर्ग की छात्राओं के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। इसके आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव:

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि विज्ञान एवं कला वर्ग की छत्राओं के सैद्धान्तिक मूल्यों में अन्तर होता है। वर्मा (1995) ने भी शोध के द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कला वर्ग की छात्राओं की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के छात्राओं में सैद्धान्तिक मूल्य का स्तर उच्च होता है। इसके विपरीत आर्थिक, सौंदर्य बोधात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं पाया गया। इससे स्पष्ट है कि कला वर्ग की छात्राओं की तुलना में विज्ञान वर्ग की छात्राओं में सैद्धान्तिक मूल्यों के विषय में जागरूकता अधिक होती है। इस अन्तर का कारण विज्ञान वर्ग की छात्राओं की पृष्ठभूमि, उन्हें प्राप्त होने वाली सुविधाएं, परिवार का वातावरण एवं उनकी स्थिति में निहित हो सकता है। इन छात्राओं की स्थिति कलावर्ग की छात्राओं से वेहतर होती है जो उनके सैद्धांतिक मूल्यों के विकास में सहायक होती है।

मूल्यों का विकास करने में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। छात्राओं में अन्य मूल्यों के विकास हेतु उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में मूल्यों से युक्त कुछ विशिष्ट सम्प्रत्यय को

सम्मिलित करना आवश्यक है। जैसे–अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध, महिला सशक्तीकरण, पर्यावरण एवं जनसंख्या शिक्षा आदि। इसके लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों को यह दायित्व निर्वहन करना होगा कि वे सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से संबंधित जागरूकता अभियान को बढ़ावा दे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

- कालरा आर०एम० (2003). *वेल्यू ओरिएण्टेड एजूकेशन इन स्कूल थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस,* नई दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन ।
- कुमार सुरेन्द्र (2008). सामाजिक रूप से वंचित स्नातक स्तर की छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन, शिक्षा शास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्र।
- गौड़ आर0एस0 (1975), स्टडी ऑफ वैल्यूज एण्ड परसेप्शन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स एण्ड देयर रिलेशन टू लर्निंग, पी–एच0 डी0 राजस्थान विश्वविद्यालय, एम0बी0बुच (संपा0) *सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन* बड़ोदा, सोसाइटी फार एजूकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलेपमेण्ट ।
- त्रिपाठी, एम0 (1966) कम्पेरीसन बिट्वीन सोसियो इकोनौमिक स्टेटस, इन्टेलिजेन्स, पर्सनल प्रौबलम, एटीट्यूड एण्ड सर्टेन वैल्यूज ऑफ दयालबाग एण्ड सिटी (आगरा) स्टूडेन्ट, *जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च* ।
- वर्मा, धर्मेन्द्र (1995), ए स्टडी ऑफ वैल्यू पैटर्न एमंग कॉलेज यूथ ऑफ रूहेलखण्ड रीजन विथ स्पेशल रिफरेन्स टू सेन्स ऑफ रिस्पोन्सबिलिटि, पी0एच0डी0 एजूकेशन, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, इण्डियन एजूकेशनल एबस्ट्रैक्ट, एन0सीई0आर0टी0।
- वर्मा पून्नू (2005), स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के राष्ट्रीय मूल्यों का अध्ययन, *रिसर्चेज एण्ड स्टडीज*
- वर्मा, सुरेन्द्र (1995), भारतीय जीवन मूल्य, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी,
- श्रीवास्तव कल्पना (2004), स्टडी ऑफ सेल्फ कान्सेप्ट, एडजेस्टमेन्ट एण्ड वेल्यूज ऑफ गर्ल्स स्टडीइंग इन को–एजूकेशन एण्ड वूमेन्स कॉलेजेस, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, बुण्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

***